हिंदी आनर्स बी० ए० पार्ट - 2 पेपर - 4th
हिन्दी साहित्य का इतिहास
इकाई - 4 हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ — कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना -

परीक्षा के पूर्व एक बार पढ़े गये विषय को अवश्य दुहराना चाहिए। इस बात को स्मरण रहे कि हिंदी गद्य आधुनिक काल की देन है। जहाँ प्राचीन ~~काल~~ साहित्य काव्य तक सीमित था वहीं आधुनिक काल में गद्य ~~और~~ की विविध विधायें सामने आयी। संस्कृत साहित्य में नाटकों में गद्य का अस्तित्व था सिद्धों के उपदेश, जैनों के धर्मोपदेश में भी गद्य का अस्तित्व है। ये सभी अपभ्रंश और प्राकृत भाषा में हैं। हिन्दी परिवार की भाषाओं में गद्य का उन्मेष सर्वप्रथम राजस्थानी गद्य में प्राप्त होता है। खड़ी बोली गद्य का विकास चार लेखकों के द्वारा 19 वीं सदी के प्रारंभ में हुआ। इनके नाम हैं — मुंशी सदासुखलाल, मुंशी इंशा अल्ला खाँ, सदल मिश्र एवं पंडित लल्लूलाल। इन लोगों के लेखन में हिन्दी गद्य का प्रारंभिक रूप नजर आता है। मुंशी इंशा अल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' शीर्षक से एक कहानी लिखी जिसे विद्वान हिन्दी की प्रथम कहानी मानते हैं। भारतेन्दु युग में नाटक और निबंध प्रचुरता से लिखे गये किन्तु कहानी की विशेष प्रगति नहीं हुई। हिन्दी कहानी का उन्मेष द्विवेदी काल में हुआ। उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना जैसी विधायें क्रमिक रूप से द्विवेदी युग में पूर्णतया उभरकर सामने आई। आपकी सुविधा के लिए इन सभी विधाओं का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है —

कहानी - जीवन के किसी मार्मिक ~~सत्य~~ तथ्य को नाटकीय प्रभाव के साथ व्यक्त करनेवाली, अपने में पूर्ण कलात्मक गद्य-विधा को कहानी कहा जाता है। हिन्दी में मौलिक कहानियों का आरम्भ 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के बाद हुआ। कहानी या आख्यायिका हमारे देश के लिए नयी चीज नहीं है। पुराणों में शिक्षा, नीति एवं हास्य-प्रधान आख्यायिका उपलब्ध होती हैं, किन्तु आधुनिक साहित्यिक कहानियाँ उद्देश्य और शिल्प में उनसे भिन्न हैं। आधुनिक कहानी जीवन के किसी मार्मिक तथ्य को नाटकीय प्रभावित करती है। हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचन्दोत्तर युग में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क',

भगवती चरण वर्मा, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, फणीश्वर नाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा जैसे लेखकों ने इस दिशा को अधिक कलात्मक और समृद्ध बनाया है। हिन्दी कथा साहित्य में विविध प्रवृत्तियाँ समय-समय पर अस्तित्व में आयी। इनमें से नई कहानी ने प्रमुखता से अपना स्थान बनाया।

उपन्यास - हिन्दी में 'उपन्यास' शब्द का आविर्भाव संस्कृत के उपन्यास शब्द से हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है - सामने रखना। उपन्यास में 'प्रसादन' अर्थात प्रसन्न करने का भाव भी निहित है। किसी घटना को इस प्रकार सामने रखना कि उससे दूसरों को प्रसन्नता हो, उपन्यस्त करना कहा जायेगा। किन्तु इस अर्थ में 'उपन्यास' का प्रयोग आजकल नहीं होता। हिन्दी में 'उपन्यास' अंग्रेजी 'नॉवेल' का पर्याय बनगया है। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' माना जाता है। प्रेमचन्द जी ने हिन्दी उपन्यास को सामयिक-सामाजिक -जीवन से सम्बद्ध करके एक नया मोड़ दिया था। वे उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझते थे। उनकी दृष्टि में मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है। वस्तुत: उपन्यास गद्य साहित्य की वह महत्त्वपूर्ण कलात्मक विधा है जो मनुष्य को उसकी समग्रता में व्यक्त करने में समर्थ है। प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवती चरण वर्मा, अमृतलाल नागर, नरेश मेहता, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा आदि लेखकों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया है।

नाटक - रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुत: रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण रूपक कहा गया है। अभिनय के समय नट पर दुष्यन्त या राम जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है, इसीलिए इसे रूपक कहते हैं। नट (अभिनेता) से संबंधित होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है

आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका विशेष विकास नहीं हुआ। छायावाद युग में जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों ने हिन्दी नाट्य साहित्य का परिदृश्य ही बदल डाला। आपने बी.ए. पार्ट I में जयशंकर प्रसाद की रचना 'चंद्रगुप्त' का अध्ययन किया है। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्द दास, डॉ० रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है। नाटकों का एक महत्त्वपूर्ण रूप एकांकी है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है।

<u>निबंध</u> - हिन्दी में निबंध शब्द अंग्रेजी के 'एस्से' शब्द के पर्याय के रूप में व्यवहृत होता है। Essay शब्द का अर्थ है- प्रयास। अर्थात् किसी विषय के सम्बन्ध में कुछ कहने का प्रयास ही एस्से अथवा निबंध है। 'प्रयास' होने के कारण एस्से या निबंध अपने मूलरूप में प्रौढ़ रचना नहीं मानी गयी है। वह शिथिल मनःस्थिति में लिखित ~~अव्यवस्थित~~ अव्यवस्थित और ढीली-ढाली रचना मानी जाती है। व्यवहार में विचार-प्रधान गंभीर लेखों तथा भाव प्रधान आत्म व्यंजक रचनाओं, दोनों के लिए निबंध शब्द का प्रयोग होता है। निबंध की परिभाषा देते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है - निबंध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया है।" निबंध को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है- (1) विचार प्रधान अथवा वैचारिक निबंध और (2) व्यक्तित्व प्रधान अथवा ललित निबंध। पहले प्रकार में विचार एवं तर्क की प्रधानता होती है। रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'चिंतामणि' के निबंध इसी ~~श्रे~~ श्रेणी में आते हैं। दूसरे प्रकार के निबंधों में हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध आते हैं यथा - 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', 'अशोक के फूल' और 'एक कुत्ता और एक मैना' आदि।

हिन्दी में निबंध-रचना का आरंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है। इस युग के लेखकों में - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और बालमुकुन्द गुप्त ने विविध विषयों पर निबंध लिखे। उसके पश्चात महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाब राय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि ने इस विधा का विकसित और समृद्ध किया। आचार्य शुक्ल के उपरांत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह दिनकर, वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय आदि लेखकों ने हिन्दी निबंध की परंपरा को आगे बढ़ाया।

आलोचना - आलोचना का शाब्दिक अर्थ है - किसी वस्तु को भली प्रकार देखना। भली प्रकार देखने से किसी वस्तु के गुण-दोष प्रकट होते हैं। इसलिए किसी साहित्यिक रचना को भली प्रकार देखकर उसके गुण-दोषों को प्रकट करना उसकी आलोचना करना है। आलोचना के लिए 'समीक्षा' शब्द भी प्रचलित है। इसका भी लगभग यही अर्थ है। हिन्दी में आलोचना अंग्रेजी के 'क्रिटिसिज्म' शब्द का पर्याय बन गया है। भारतीय काव्य चिन्तन के क्षेत्र में सैद्धांतिक या शास्त्रीय आलोचना का विशेष महत्व रहा है। हमारा यह पक्ष अत्यंत समृद्ध और पुष्ट है। हिन्दी में आलोचना की आधुनिक पद्धति का आरम्भ भारतेन्दु युग में बालकृष्ण भट्ट और बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' द्वारा लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की आलोचना से माना जाता है। आगे चलकर द्विवेदी युग में - महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, पदुमसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन आदि ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया। हिन्दी आलोचना का उत्कर्ष आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना कृतियों के प्रकाशन से माना जाता है। आचार्य शुक्ल के बाद, बाबू गुलाब राय, पंडित नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र और डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० नामवर सिंह की हिन्दी आलोचना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संक्षेप में कुछ गद्य विधाओं का परिचय आपको दिया गया। शेष कुछ अन्य ~~गद्य~~ गद्य विधाओं का परिचय अगली कुछ कक्षाओं में दिया जायेगा। इसबीच आपलोगों को कोई शंका हो तो मेरे What's up नं० 9431881251 पर मैसेज कर सकते हैं या सुबह 10.00 बजे से 1.00 तक फोन कर सकते हैं। संवाद कायम रखना ही इस लकडाउन में आपके अध्ययन में सहायक रहेगा।

डॉ० करुणा राय
एसोशिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग -
श्री गुरु गोविन्द सिंह कालेज
पटना सिटी

मेरा E-mail ID इस प्रकार है -
Karuna_1812@yahoo.co.in